एक ओंकार सतिगुर प्रसादि
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
हक
हक
मेरे
साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
जान बूझ कै - बावरे - ते काज बिगारिओ । पाप करत सुकचिओ
नही - नह गरब निवारिओ । जिह बिध गुर उपदेसिआ -
सो सुन रे भाई । नानक कहत पुकार के - गहु प्रभ सरनाई ।
www.9009.co.in

"बावरा"

1. जान बूझ के – बावरे – तै काज बिगारिओ । पाप करत सुकचिओ नही – नह गरब निवारिओ ।

अर्थ:- हे मूर्ख मनुष्य ! यह सब कुछ जानता-समझता हुआ भी तू अपना काम बिगाड़ रहा है । तू पाप करता हुआ संकोच नहीं करता, (यही नहीं) तू अहंकार भी दूर नहीं करता ।

हरि जस रे मना गाइ लै – जो संगी है तेरो । अउसर बीतिओ जात है – कहिओ मान लै मेरो ।

अर्थ:- हे मन ! परमात्मा की गुणस्तुति के गीत गाया कर । यह गणस्तुति ही तुम्हारा वास्तविक साथी है । मेरा वचन मान ले क्योंकि समय बीतता जा रहा है ।

स्मपत रथ धन राज सिउ - अत नेहु लगाइओ । काल फास जब गल परी - सभ भइओ पराइओ ।

अर्थ:- हे मन ! मनुष्य धन-पदार्थ, रथ, माल, राज्य आदि के साथ अत्यन्त नेह करता है । लेकिन जब मृत्यु की फाँसी गले में पड़ जाती है, तब हरेक चीज़ पराई हो जाती है ।

जिह बिध गुर उपदेसिआ - सो सुन रे भाई । नानक कहत पुकार कै - गहु प्रभ सरनाई । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 727)

अर्थ:- गुरु नानक का कथन है कि हे भाई ! गुरु ने जिस प्रकार शिक्षा दी है, वह श्रवण कर (और) प्रभु की शरण ले ।

2. बावरे - तै गिआन-बीचार न पाइआ । बिरथा जनम गवाइआ ।

अर्थ:- अरे मूर्ख ! तूने कभी सच्चे ज्ञान को प्राप्त नहीं किया, समूचा जन्म व्यर्थ गँवा दिया ।

थाके नैन स्रवन सुन थाके - थाकी सुंदर काइआ । जरा हाक दी सभ मत थाकी - एक न थाकस माइआ ।

अर्थ:- आँखें अब देखने में असमर्थ हैं, कान सुनकर थक गये हैं और सुन्दर शरीर भी शिथिल हो गया है। बुढ़ापे के आगमन से मन, बुद्धि भी शिथिल हो गये हैं, किन्तु अब तक भी तुम्हारा मोह नहीं टूटा।

तब लग प्रानी तिसै सरेवहु – जब लग घट महि सासा। जे घट जाइ त भाउ न जासी – हरि के चरन निवासा।

अर्थ:- हे मनुष्य ! जब तक तेरे शरीर में श्वास आता-जाता है, तब तक उस परमात्मा की सेवा कर। यदि शरीर नष्ट भी हो जायेगा तो भी प्रभु से लगा तेरा प्यार हमेशा बना रहेगा।

जिस कउ सबदु बसावै अंतरि – चूकै तिसहि पिआसा। हुकमै बूझै चउपड़ खेलै – मनु जिणि ढाले पासा।

अर्थ:- जिन जीवों के मन में हरि का नाम बसता है, उनकी तृष्णा दूर हो जाती है। वह हरि के हुक्म को समझता है और जीवन के इस चौपड़ के खेल पर मन का पासा फेंकता है।

जो जन जानि भजहि अबिगत कउ – तिन का कछू न नासा। कहु कबीर ते जन कबहु न हारहि – ढालि जु जानहि पासा।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 793)

अर्थ:- जो लोग ज्ञानपूर्वक अविनाशी परमात्मा का जाप करते हैं, वे कभी नष्ट नहीं होते। कबीरजी कहते हैं कि पासा फेंकते हुए वे जीव कभी पराजित नहीं होते।

शब्द का भाव: हरि के नाम/हुक्म के बिना मानव जनम की बाजी हार जाई जाती है, क्योंकि माया का मोह दिन-ब-दिन बढ़ता जाता है।

3. सुण बावरे - तू काए देख भुलाना । सुण बावरे नेहु कूड़ा लाइओ - कुस्मभ रंगाना ।

अर्थः- हे मूर्ख जीव ! तू इस संसार को देख-देखकर क्यों भूला रहा है ? संसार का प्रेम मिथ्या होता है, कुसुम्भ के रंग की तरह कच्चा, जो कभी भी धुल सकता है ।

कूड़ी डेख भुलो अढ लहै - न मुलो गोविद नाम मजीठा । थीवह लाला अत गुलाला - सबद चीन गुर मीठा ।

अर्थः- जिस मिथ्या वस्तु को देखकर तुम भूल गये, उसका मोल तो कौड़ियों में भी नहीं मिलता, जब कि दूसरी ओर हरि का नाम मजीठ जैसे पक्के रंग का है (एक बार लग जाए तो कभी उतरता नहीं)। हे जीव ! गुरु-कृपा से यदि तू शब्द-रहस्य को समझ ले तो तुझ पर गाढ़ा लाल रंग चढ़ सकता है ।

मिथिआ मोह मगन थी रहिआ - झूठ संग लपटाना । नानक दीन सरण किरपा निध - राख लाज भगताना ।

अर्थः- झूठे मोह में पड़कर तो माया के संग लिपट रहा है । गुरु नानक का कहना है कि यदि तुम दैन्यभाव से कृपानिधि प्रभु की शरण में जाओ तो वह भक्तों की लाज रखनेवाला (तुम्हें भी सहारा देगा) ।

सुण बावरे - सेव ठाकुर नाथ पराणा । सुण बावरे - जो आइआ तिस जाणा ।

अर्थः- हे मूर्ख ! तू प्राणनाथ परमात्मा की सेवा कर । सुन, जो इस संसार में आया है उसे जाना होता है । यह सब कुछ, जिसे तू निश्चल समझता है, मिट जायेगा ।

निहचल हभ वैसी सुण परदेसी - संतसंग मिल रहीऐ । हरि पाईऐ भागी सुण बैरागी - चरण प्रभू गह रहीऐ ।

अर्थः- इसलिए, हे परदेसी आत्मा ! सन्तों का संग कर (उसी में कल्याण है)। हे जीव ! परमात्मा भाग्य से मिलता है, हमारा कर्तव्य उसके चरणों में पड़े रहना है ।

एह मन दीजै संक न कीजै - गुरमुख तज बह माणा । नानक दीन भगत भव तारण - तेरे किआ गुण आख वखाणा ।

अर्थः- गुरु के द्वारा यदि जीवात्मा निःशंक होकर अपना अहम् त्याग दे और मन प्रभु को समर्पित कर दे तो, गुरु नानक कहते हैं कि वह परमात्मा भक्तों और दीनों को मुक्त करता है, उसके गुण अनिर्वचनीय हैं ।

सुण बावरे - किआ कीचै कूड़ा मानो । सुण बावरे - हभ वैसी गरब गुमानो ।

अर्थः- हे मूर्ख ! सुनो, क्यों मिथ्या अभिमान करते हो ? ये तुम्हारा गर्व-गुमान सब नष्ट हो जानेवाला है । हे बावरे ! (नाशवान पदार्थों का) झूठा अहंकार नहीं करना चाहिए । हे बावरे ! सुन, (पदार्थों से संबंध टूटने पर ये) सारा गर्व और गुमान भी खत्म हो जाएगा ।

निहचल हभ जाणा मिथिआ माणा – संत प्रभू होइ दासा ।
जीवत मरीऐ भउजल तरीऐ – जे थीवै करम लिखिआसा ।

अर्थः- निशचय ही मिथ्या अभिमान का नाश होगा, इसलिए किसी हरिजन सन्त की दासता स्वीकार करो, यदि उसकी कृपा हो जाय तो जीते-जी मरकर भवसागर को तरा जा सकता है । हे भाई ! जिस जगत को (तू) सदा स्थिर समझता है, यह सारी सृष्टि चलायमान है, इसका मान करना झूठा कर्म है । (यहाँ) गुरु का प्रभु का दास बने रहना चाहिए । अगर सदा स्वै भाव दूर किए रखें, तो संसार-समुंदर से पार लांघा जाता है, (पर ये तब ही हो सकता है,) अगर (परमात्मा की) मेहर से (माथे पर लेख) लिखे हों ।

गुर सेवीजै अम्रित पीजै – जिस लावह सहज धिआनो । नानक सरण पइआ हरि दुआरै – हउ बल–बल सद कुरबानो ।

अर्थः- हे हरि ! जिसको तुम अडिग समाधि प्रदान करते हो, वही गुरु की सेवा करता और नामामृत पीता है । हे भाई ! गुरु की शरण पड़े रहना चाहिए (गुरु से ही) आत्मिक जीवन देने वाला नाम-जल पीया जा सकता है । (पर, हे प्रभु! वही मनुष्य तेरा नाम-अमृत पीता है) जिसकी तवज्जो तू आत्मिक अडोलता में टिकाता है । गुरु नानक का कथन है कि गुरु की शरण लेनेवाले जीव पर वे सदैव बलिहारी और कुर्बान हैं ।

सुण बावरे – मत जाणह प्रभ मै पाइआ । सुण बावरे – थीउ रेण जिनी प्रभ धिआइआ ।

अर्थः- हे मूर्ख ! (प्रभु मिल भी जाय तो) यह न समझ लेना कि तुमने उसे पा लिया, तुम्हें तो प्रभु को पा लेनेवालों के चरणों की धूल हो जाना है ।

जिन प्रभ धिआइआ तिन सुख पाइआ - वडभागी दरसन पाईऐ । थीउ निमाणा सद कुरबाणा - सगला आप मिटाईऐ ।

अर्थः- जो जीव प्रभु का नाम जपते हैं वे सुख पाते हैं और बड़े सौभाग्य से परमात्मा का दर्शन पा लेते हैं । हमें विनम्र होकर हर प्रकार के अहंकार का त्याग करके परमात्मा पर कुर्बान हो जाना है ।

ओह धन भाग सुधा जिन प्रभ लधा - हम तिस पह आप वेचाइआ । नानक दीन सरण सुख सागर - राख लाज अपनाइआ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 777)

अर्थः- वह सौभाग्य-शाली धन्य है जो परमात्मा को पा लेता है, हम उस पर अपने को कुर्बान करते हैं । गुरु नानक कहते हैं कि हे सुखसागर परमात्मा ! मुझे अपनी शरण में अपना लो और मेरी लाज रखो।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

ऐक शब्द

साध संगत जी, यदि कुछ भी जरा सा भी कम रह गया अथवा बड़ गया है तो हम दोनों हाथ जोड़कर नतमतसक आपसे क्षमा प्रार्थी हैं । अतः कृपया क्षमा प्रदान करें और बख्शने की भी कृपालता करें - धन्यवाद ।

सृष्टि में सदा ही कोई एक विरला - दुर्लभ - मर्यादित - महाजीव विशेष विद्यमान होता ही है, अतः हम उस महा प्राणी को दोनों हाथ जोड़ नतमतसक सदा ही नमस्कार करते हैं ।

एक ओंकार सतिगुरु प्रसादि
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
तपः तपो
नमो नमः
हक
हक
मेरे साहिब जी
सतसंग
जान बूझ कै - बावरे - ते काज बिगारिओ । पाप करत सुकचिओ
नही - नह गरब निवारिओ । जिह बिध गुर उपदेसिआ -
सो सुन रे भाई । नानक कहत पुकार के - गहु प्रभ सरनाई ।
www.9009.co.in